

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

३५३

•••••

सर्वागमोत्तमोत्तम महारहस्यमय उर्ध्वाग्न्याय

कुलार्णवतन्त्रम्

‘नीरक्षीरविवेक’-भाषाभाष्यसमन्वितम्

व्याख्याकार

डा. परमहंस मिश्र

धार्मिक पुस्तक भण्डार

त्रिवेणी घाट ऋषिकेश उत्तराखण्ड

9897274427, 9897520609

धार्मिक पुस्तकें फोटो फ्रेमिंग एवं संस्कृत साहित्य



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

श्रीकुलार्णवतन्त्रम्

विषयानुक्रमः

प्रथम उल्लास

जीवजातिस्थिति

विषयाः	पृष्ठ सं.
१. कुलविमर्शः	१-९
२. (अ) कुलार्णवतन्त्र के प्रवर्तक कैलाशशिखरासीन पार्वतीपरमेश्वर (आ) देवी के प्रश्न	१ १-२
३. परमेश्वर के द्वारा प्रश्नों के समाधान का आश्वासन, निर्विकार निष्कल शिव और अनादिविद्योपहित जीव	३
४. देह, आयु, कर्मज भोग, संसृति एवं विभिन्न योनियों में जन्म, मानुष्य का महत्त्व, आत्मघात, जीवों के स्वभाव, इसी जन्म में नरक व्याधि-चिकित्सा की आवश्यकता, व्याघ्रीजरा, आत्महितसाधन, मोहसुराविष्ट लोक और इसके माया विमोहित अनन्त अनर्थों से उत्पन्न विघ्नों के प्रति जीव लोक की उदासीनता	५-८
५. स्वप्नवत् सम्पत्ति, कुसुम समान यौवन और तडित्चञ्चल आयु, जीवन के निष्फल बीतने का भय, घातकों के भय, जीवन में निर्भय निवास, असम्भव, मृत्यु का अज्ञान	८-१०
६. काल सागर में डूबता जीवन, कच्चे घड़े में जल रखने के परिणाम का अज्ञान, आयु के प्रति आस्था का निषेध, कालवृक और मृत्यु की करतूत और उससे सावधानी की आवश्यकता	११-१२
७. आयुक्षय के कारण, देहान्तर प्राप्ति, कर्म भोग आत्मापराध वृक्ष के फल, सङ्ग और मोक्ष, शोकशङ्कु, देहत्याग की विवशता, दुःखमूल संसार	१२-१५
८. संसार के वर्जन का सुझाव, इन्द्रिय तत्स्करों से सावधानी आवश्यक, यमबाधा भयानक	१५-१७
९. अबुध और नारकीयों की पहचान, जन्म-मरण, क्रियायास, क्रतु विस्तार आदि में पड़े मायाविमोहित मूढ जीव, मुक्ति के लिए देहपीड़ा अनावश्यक	१७-१९
१०. वेषधारी दाम्भिक उपदेशकों से सावधानी अपेक्षित, योगी, ब्रती, विबुध होने की योग्यता, मोक्ष का कारण तत्त्वज्ञान	१९-२१
११. षडदर्शनमहाकूप में पतित पशुओं की स्थिति, कुतार्किक, विडम्बक आदिकों की परतत्त्वपराङ्मुखता, पाक के आस्वादरस से अपरिचित दर्वी की तरह बहुजों की दशा, संसार मोहनाश प्रक्रिया में शाब्दबोध असमर्थ, शास्त्रान्त में आयु असमर्थ	२२-२४

१२. सार रहस्यज्ञान के लिए नीर-क्षीर-विवेक आवश्यक, तत्त्वज्ञान का महत्त्व, ज्ञान से मुक्ति, ज्ञान ही मुक्ति का हेतु, मुक्तिप्रद गुरु का एक वाक्य, गुरु से अद्वैतज्ञान, आगमोत्थ और विवेकोत्थ द्विविध ज्ञान, ममनिर्ममानुभूति, विद्या से ही विमुक्ति, तत्त्वकथा की स्थिति, तत्त्वनिष्ठता से लाभ २४-२७
१३. मोक्षतरु के आश्रय का निर्देश, कुलधर्म का मुक्तिप्रदत्व, गुरु-मुखारविन्दविनिःसृत ज्ञान से मुक्ति, उपसंहार २८

द्वितीय उल्लास

कुलधर्ममाहात्म्य

१. देवी का कुलधर्ममाहात्म्य विषयक प्रश्न, परमेश्वर कुलेश द्वारा उत्तर, परमार्थतः अकथ्य के कथन की प्रतिज्ञा, गोपन का निर्देश, कौलमत की सर्वोत्कृष्टता २९-३०
२. ज्ञानदण्ड से मथित वेदागममहार्णव का सार ही कुलधर्म, विभिन्न नहीं, हस्तिपद, जाम्बूनद, मेरुसर्षप, कुलधर्म, प्रवहण आदि उदाहरणों द्वारा कुलधर्म की श्रेष्ठता का निरूपण ३१-३२
३. भोगयोगात्मक कौल धर्म, देव और मुनिपुङ्गवों की कुलधर्म परायणता, सिद्धि हेतु कुलधर्म, उपदेश निरर्थक, कुलज्ञान प्रकाश के हेतु, योगिनीवीरमेलन, कौलसमाश्रयण का निर्देश, पूर्वजन्म के अभ्यास से कुलज्ञान का प्रकाश, इसके अन्य हेतु ३३-३५
४. अयोग्य के प्रतिकुलज्ञान कथन का निषेध, कुलज्ञान से मुक्ति, कुलधर्म छोड़कर पशुशास्त्र पठन का निषेध, कुलज्ञान के बिना मुक्ति असम्भव, भुक्ति मुक्ति का एकमात्र कारण कुलधर्म ३५-३८
५. किसी प्रकार की कठिनाई में भी अपरित्याज्य कुलधर्म, कुलधर्म की विमुखता के दोष, कुलधर्मपरायण का जीवन ३८-४१
६. कुलज्ञानी श्वपच नामतः ब्राह्मण से उत्कृष्ट, कौल का महत्त्व, भाग्यवश कुलज्ञान का प्रकाश, कुलधर्म महत्त्व ४१-४३
७. कुलज्ञ ही देवीभक्त, सारवेदी कौलिक, सर्वाधिक श्रेष्ठ कौल, षड्दर्शन शिव के ही छः अङ्ग, कौलशास्त्र वेदानुकूल, सिद्धयोगीश्वरीमत, प्रत्यक्ष प्रमाण साध्य, प्रत्यक्ष फलप्रद ही उत्तम दर्शन, अकौल का विगर्हण और कौल की भगवत्प्रियदर्शनता ४३-४६
८. कुलधर्म न जानने के विभिन्न कारण, कुलधर्म से ही देवत्वसिद्धि, कौलसेवन का महत्त्व, देवी की कृपा से रहित व्यक्ति कुलधर्म में प्रवेश के अयोग्य, कस्तूरी, कर्पूर और शर्करा आदि में विपरीत बुद्धि की तरह कौल में भी अज्ञता, मोह ४६-४९

९. कौल मत में जाप्य, गुरु कारुण्य लभ्य कुलधर्म, विडम्बकों द्वारा कौल मत को विपरीत परिभाषित करना, मद्य और मुक्ति, पंचमकार और कौल, कौलिक आचार, कुलवर्त्तन तलवार की धार पर धावन, मद्य मांसादि की महाफलवत्ता, सुरापान का निषेध ४९-५२
१०. मद्यादि सेवन की प्रायश्चित्त विधि, विधि और अविधिपूर्वक सुरादि सेवन के पुण्य और पाप, अविधिपूर्वक तृणछेदन का भी निषेध, जीवन्मुक्ति का सुखोपाय, शिवोक्त कुलशास्त्र ५२-५४
११. 'मधुव्वाता ऋतायते' आदि श्रुतिमन्त्रों के प्रमाण द्वारा मधुपान का समर्थन, उपसंहार ५५

तृतीय उल्लास

ऊर्ध्वाम्नाय और श्रीप्रासाद परामन्त्र महत्त्व

१. देवी का सर्वधर्मोत्तमोत्तम ऊर्ध्वाम्नाय विषयक प्रश्न, भगवान् द्वारा उत्तर की प्रतिज्ञा, रहस्यशास्त्र, कुलशास्त्र रहस्यातिरहस्य शास्त्र, ऊर्ध्वाम्नाय पूर्णब्रह्मात्मक शास्त्र, पाँचमुखों से पाँच आम्नाय, सभी मोक्षमार्ग के प्रवर्तक, सर्वातिशायी ऊर्ध्वाम्नाय के तत्त्वज्ञ विरल, असंख्य मन्त्र ५६-५७
२. उपमन्त्र, सर्वमन्त्रज्ञ केवल शिव, चतुराम्नायश्रेष्ठ ऊर्ध्वाम्नाय, महत्त्व, गुरुमुख विना इसकी अप्राप्ति, सद्गुरु का अन्वेषण कर्तव्य ५७-६०
३. ऊर्ध्वाम्नायज्ञ का महत्त्व, गुरुप्रासाद से ऊर्ध्वाम्नायज्ञ ही मेरा प्रिय ६१-६२
४. पूर्वाम्नाय सृष्टिरूप, दक्षिणाम्नाय स्थितिरूप, पश्चिमाम्नाय संहाररूप, उत्तराम्नाय अनुग्रहरूप, मन्त्र, भक्ति, कर्म और ज्ञानयोगमय चतुराम्नाय क्रम, आम्नायों के सङ्केत, ऊर्ध्वाम्नाय माहात्म्य, उपसंहार ६२-६३
५. मन्त्रमाहात्म्यकथन, श्रीप्रासादपरा मन्त्र, ऊर्ध्वाम्नाय का सर्वातिशायी मन्त्र, मन्त्रज्ञ शिवशिवारूप स्वयं, विभिन्न उदाहरणों द्वारा इस मन्त्र की व्याप्ति का कथन, वटबीज में वृक्ष की तरह इस मन्त्र में ब्रह्माण्ड की व्याप्ति, इससे असंगत मन्त्र अफलप्रद ६३-६५
६. प्रासादपरा मन्त्रमहत्त्व, सभी देवों द्वारा जप, प्रासादपराजपकर्ता की सामर्थ्यादि समृद्धि, मन्त्रजपकर्ता के घर चिन्तामणि, कामधेनु और कल्पवृक्ष स्वम् उपलब्ध, प्रासादपरामन्त्रज्ञ श्वपच भी प्रतिमादि प्रतिष्ठा में समर्थ, मन्त्रज्ञ का सोचना भी ध्यान और जप ६६-६८
७. प्रासादपरामन्त्रज्ञ साक्षात् शिव, दिव्यक्षेत्र, वही सर्वमन्त्रज्ञ वही मुक्त, यही मन्त्रराजमन्त्र, सर्वकामप्रद ६९-७०
८. सर्वात्मक मन्त्र, मन्त्रार्थानुसन्धान से ब्रह्म का सम्प्रकाशन, सच्चिदानन्द स्वरूप, भुक्ति मुक्ति, फलप्रदत्व, सर्वशिरोमणि मन्त्र, यही परमज्ञानरूप, दीक्षा, जप, व्रत, यज्ञ, फलप्रद और परमश्रेयस्कर ७१-७२

९. अन्य महत्त्वप्रदकथन, दो माला जप के फल, तीन, चार और पाँच माला मन्त्र जपफल, गुरु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व, अन्य सर्वाधिकों का कथन, पूर्ण माहात्म्य वर्णन असम्भव, मेरा माहात्म्य कथन पहाड़ के सामने एक सरसों के समान, उपसंहार ७३-७६

चतुर्थ उल्लास ✓✓

श्रीप्रासादपरामन्त्रविज्ञान

१. देवी के प्रश्न, परमेश्वर कुलेश का उत्तर, अब तक अनुक्त मन्त्र का प्रथम प्रकाशन, सादि मन्त्र, अनन्त चन्द्र, भुवन, इन्दु और बिन्दुयुगलसमन्वित कूट मन्त्र, प्रासाद संज्ञा का कारण, परासंज्ञा का हेतु, यही कुलमन्त्र ७७-७८
२. न्यास, प्रातः कृत्य, पूजास्थान प्रवेश, अन्य पूजाकर्म, ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, कीलक और अङ्गों के कथन, पञ्चब्रह्मन्यास, महाषोढा न्यास के अन्तर्गत प्रपञ्चन्यास ७९-८७
३. भुवन न्यास ८७-९०
४. मूर्तिन्यास, सर्ववर्गन्यास, मन्त्रन्यास, दैवतन्यास ९०-९९
५. मातृकान्यास ९९-१०१
६. ध्यान, पुं अथवा स्त्री अथवा निष्कल ध्यान १०१-१०३
७. मुद्रा, गुरुध्यान, उक्तन्यासकर्त्ता साक्षात् शिव, महाषोढान्यास का महत्त्व, वज्रपञ्जरन्यास १०३-१०५
८. ऊर्ध्वाम्नाय में प्रवेश, पराप्रासादचिन्तन और महाषोढा का परिज्ञान उत्तम तपस्या के फल, उपसंहार १०५-१०६

पञ्चम उल्लास

कुलद्रव्यदर्शन

१. देवी के कुलद्रव्य विषयक प्रश्न, परमेशकुलेश्वर द्वारा उत्तर, आधार के बिना भ्रंश, विधिवद् आधार का प्रकल्पन, त्रिपद, चतुष्पद, षट्पद या वर्तुल चार प्रकार के आधार, पात्र १०७-१०९
२. कुलद्रव्य, पैष्टी, गौडी, माध्वी, मदिरा, ग्यारह अन्य भेद, सर्वदेवप्रिय द्रव्य १२९-१३३
३. सुरादर्शन पुण्यप्रद, इच्छाशक्ति, सुरा की सुगन्धि, ज्ञानशक्ति रस, क्रियाशक्ति उल्लास, मद्याभाव में 'वटिका' प्रयोग, गुडमिश्रित तक्र ११३-११५
४. त्रिविध मांस, हिंसा वैध-अवैध, विना कारण तृण तोड़ना भी निषिद्ध, शिवार्थ पाप भी पुण्य, कौल दर्शन की द्रव्य विषयक दृष्टि, पशुवध में मन्त्र प्रयोग ११५-११६

५. पलल की सेव्यता का समर्थन, मांस के अभाव में लशुन आदि के प्रयोग, तिलमात्र मांस और तिलार्द्ध सुरा से भी तर्पण का महत्त्व, कुलपूजा महत्त्व, क्रमार्चन और श्री चक्रदर्शन के पुण्य ११६-११९
६. कुलद्रव्यमाहात्म्य, बाह्याग और अन्तर्याग दृष्टि, मद्यमहिमा, ब्रह्मा, विष्णु और महेश के कमण्डलु, शङ्ख और कपाल भी मधुपात्र— ११९-१२२
७. वारुणी अवश्यपेय, क्रतु में सोमपान की तरह मद्यपान, कुलद्रव्य और पञ्चमुद्रा महत्त्व १२२-१२४
८. नरकगामी वीर, कौलिकाचार अनिवार्य, कुलज्ञानविहीन के लिये कुल-द्रव्य निषिद्ध, समयाचारज्ञान आवश्यक, शास्त्रविधि का माहात्म्य १२४-१२६
९. दीक्षाहीन की असद्गति, रौरव के तीन कारण, पक्षद्वयविखण्डक को भी रौरव, अन्य दर्शनसिद्ध के लिए कुलद्रव्यनिषिद्ध, नशेड़ी का पतन, अक्षय नरक के हेतु, असंस्कारी पंचमुद्रासेवी ब्रह्मनिष्ठ भी निन्द्य १२६-१२८
१०. महापद्मवन का अधिकारी, सामरस्यसुखोदय का महत्त्व, वास्तविक सुधापान, पलाशी का लक्षण, पंचमुद्रास्वरूप १२८-१२९
११. उपसंहार १३०

षष्ठ उल्लास

द्रव्यसंस्कार

१. देवी के प्रश्न और परमेश्वर के उत्तर, दृढव्रत कुलज्ञानी, नियतात्म-भाव से अर्चन, पूजन, यजन गुरुपदेशविधि से तर्पण, मन्त्रयोग से चक्रपूजन 'भैरवोऽहं' भाव से कुलपूजन, नियतव्रत कौलिक भुक्ति-मुक्ति का अधिकारी, मण्डपस्थान में कुल पूजा की व्यवस्था १३१-१३३
२. पंचशुद्धि, पंचवर्ण रजश्चित्रता, स्थानशुद्धि, मन्त्रशुद्धि, द्रव्यशुद्धि, देवशुद्धि, पशुशुद्धि, मण्डलध्यान, पूजन, पंचधा द्विधा, त्रिधा, एकधा पात्र, पूजाविधान, निष्कल-सकल तर्पण, असंस्कृत और संस्कृत-सुरा के फल, अधिवास के विना पूजा निषिद्ध, आसव और पूजा १३४-१३७
३. देवताप्रीतिकारक द्रव्य, चौबीस मन्त्रों से सुराशुद्धि, स्वर की सोलह कलाएँ, व्यञ्जनों की कलाएँ, अग्निकलाएँ, ब्रह्मा की सृष्टि कलाएँ, स्थिति-तिरोधान, नादानुग्रह कलाएँ, वैदिक सांकेतिक और छान्दसिक मन्त्रों से पूजन १३८-१४१
४. आत्मस्तव और पाँच मन्त्रों के प्रयोगपूर्वक पूजनक्रम १४१-१४४
५. दिव्यौघ, सिद्धौघ और मानवौघक्रम, देवी-आवाहन, अरूपा शिवा रूपिणी पूजा, प्रतिमा में देवत्व, देवतासान्निध्य, उपासना का महत्त्व, सकलीकरण, क्षमापन १४५-१४७

६. पूजा के तात्त्विक रहस्य, मन्त्र और यन्त्र, एकपीठ में आवाहित देव की पूजा, अन्य का आवाहन और अन्य का पूजन निषिद्ध, गुरु और शास्त्र से जान कर ही पूजन उचित, तर्पण प्रयोग १४८-१५१
७. ध्यान और उपसंहार

सप्तम उल्लास

बटुकशक्त्यादि पूजन

१. देवी के प्रश्न और ईश्वर के उत्तर, बटुकपूजन का महत्त्व, पूजा द्रव्य, भक्तिपूर्वक समर्पण, ४४ अक्षर का बटुक मन्त्र, बलिपूजामन्त्र, योगिनी मन्त्र, क्षेत्रपाल बटुक बलिमन्त्र, पश्चिम में बटुक और उत्तर में योगिनी बलि का विधान १५३-१५८
२. बटुकादि पूजा के बाद कुलदीप प्रदर्शन, आरती सुरापान विधान, असंस्कृत स्त्री की वही दीक्षा का नियम, कुलाष्टक और अकुलाष्टक सहजा, चातुर्वर्ण्याङ्गनाशक्ति, यज्ञ में स्वीकार्य, शक्तिरूपा अन्य स्त्रियों के लक्षण १५९-१६२
३. अस्वीकार्य स्त्रीशक्तियों के लक्षण, ७३ अक्षरों का गुर्वर्थ समर्पण-मन्त्र, क्षमा प्रार्थना, सावरण देवीपूजन, 'शेषिका मन्त्र', उच्छिष्ट-मातङ्गी ध्यान, तदनन्तर कुलद्रव्यपान, तरुणोल्लाससहित गुरुद्वारा तत्त्वत्रय समर्पण १६२-१६६
४. उपायन अर्पण और गुरुचरणों में प्रणिपात, कृपालु गुरुदेव द्वारा मालिनी बीजों द्वारा शिष्य के आत्मतत्त्व का शोधन, सूक्ष्मशरीरशोधन, बीज शोधन, शिष्य के शुद्ध देह का चिन्तन, तत्त्वत्रयमय जगत् १६६-१६९
५. कुलद्रव्यपान विधि, अलिपान का यज्ञीयरूप प्रकल्पन, अहन्ता-पात्र में इदन्तामृत भरकर पराहन्ता की अग्नि ज्वाला में हवन १६९-१७१
६. उल्लासपर्यन्त मधुपान का निर्देश, गुरुदैवतमन्त्रैक्य भावन, मधुपान त्रिविध, चर्वण, सुरा के साथ भोजन अमृत, दिव्य, वीर और पशुविधि से त्रिविध मधुपान और इनकी परिभाषाएँ, आगलान्त द्रव्यपान १७१-१७४
७. पशुपान का एक चित्र, त्रिविधपानफल, दिव्यपानानन्द के समक्ष सार्वभौम साम्राज्य का आनन्द भी अधूरा, कुलद्रव्यपान का सुख ही मोक्ष सुख, उपसंहार १७४-१७५

अष्टम उल्लास

तत्त्वत्रयादि भेद

१. देवी के उल्लास, द्रव्यपात्रादि सङ्गति, रत्युद्वासन काल, श्रीचक्र तथा कौलिक शक्तियों की चेष्टा विषयक प्रश्न, परमेश्वर कुलेश के उत्तर, सात उल्लास, पात्रमेलन, द्रव्य सङ्गति, सङ्गपरित्याग, उच्छिष्ट ग्राह्य, स्त्री का उच्छिष्ट ग्राह्य, प्रौढोल्लास में करणीय, मन्त्र प्रयोग १७६-१८२

२. बल्युद्गासन, शान्तिस्तव, प्रसाद, योगिनी मण्डल, 'इच्छैवशास्त्र-सम्पत्तिः' (५७), उल्लास की चेष्टाएँ ही सत्क्रिया, योग की कौल परिभाषा, प्रौढान्तोल्लास की परावासनात्मक दशाएँ, सारी चेष्टाएँ ही देवता भावात्मिका १८२-१९३
३. कौलिक (भैरवावेशसमाविष्ट) की निन्दा का निषेध, उनमें देव-बुद्धि का निर्देश, उन्मनान्तोल्लास, समवस्था की परिभाषा, मूर्च्छना परामन्त्रस्वरूप १९३-१९५
४. अन्तर्लक्ष्य बहिर्दृष्टि का सिद्धान्त, शाम्भवीमुद्रा, सामरस्य समाकृति दशा, ब्रह्मध्यानवत् उल्लास की दशा, सप्तमोल्लासदशा का महत्त्व, आठ प्रत्यय, आठ अवस्थाएँ और अष्टसिद्धियों की सिद्धि १९६-१९७
५. कुलतत्त्वज्ञ में परमेश्वर के तात्त्विक गुण, कौलिक की परिभाषा, भैरवी चक्र में सभी वर्ण द्विजाति, चक्र में सभी शिवरूप, श्रीचक्रमहत्त्व १९७-२००
६. भगलिङ्गामृत का महत्त्व, शिवशक्तिसमायोग ही सन्ध्या, समाधि की परिभाषा, उपसंहार २००-२०२

नवम उल्लास

योगसंस्थापन

१. योग, योगीश लक्षण और कुलचक्रार्चन विषयक देवी के प्रश्न, ईश्वर के उत्तर का प्रवर्तन, ध्यान, निष्कल ध्यान, ब्रह्मज्ञान, योगविद् परिभाषा, समाधि तन्मयता की विधि, मुक्त पुरुष, जीवन्मुक्त, समाधिस्थ, ब्रह्मभूत साधक, निमीलनोन्मीलन गतध्यान २०३-२०६
२. अपने शरीर की खुजली की जानकारी की तरह ब्रह्माण्ड के व्यापार को जान लेने वाला परमयोगी, मन्त्रों का किङ्करत्व, आत्मस्थ की चेष्टाएँ ही पूजा, उसका जल्प ही मन्त्र, निरीक्षण ध्यान, समाधि दशा, परात्मा के दर्शन के फल, परमपद के समक्ष देवपद तुच्छ, अव्यय परमात्म दर्शन के फल, योग और धारणा भी महत्त्वहीन, परब्रह्मज्ञान का महत्त्व, योग की परिभाषा, परमध्यान महत्त्व, ब्रह्मा-हमस्मि चिन्तन का फल, तत्त्ववित् की उपलब्धि, उत्तम, मध्यम और अधम स्थितियाँ, लय का महत्त्व २०७-२१०
३. पूजा, ध्यान, मन्त्र, सङ्ग-विसङ्ग के स्तर, देह, जीव, शिव, सदाशिव और योगीन्द्र के स्वरूप, परतत्त्ववित् योगी, मोक्ष, कुलयोगी, कुलद्रव्यप्रशंसा २११-२१४
४. कुलमार्ग, कुल की मान्यताएँ, उनके कृत्य के रूप और स्तरीय दृष्टि, आत्मविज्ञानी कुलमार्गी का जीवनक्रम, कौलिक वृत्त, कौलिकाचार, नाना-वेश, नानारूप, सदा शुचित्व, कुलमार्ग ही मार्ग, कौलिक परिभाषा २१५-२२०

५. कौलिकोत्तम आचार, कौलिक चाण्डाल भी पवित्र, कुलज्ञानी का शिवसात्रिध्य, कौलिक ही सभी तरह उत्कृष्ट, शिव द्वारा भक्त के जिह्वाग्र से पाकरस ग्रहण, सुर कुलप्रिय, पूजा के रहस्य, कुलधर्मज्ञान आवश्यक २२१-२२५
६. कुल निष्ठ को ही दान, कुलनिष्ठ का सत्कार, दान, वीरचक्रार्पित मधु, कुलदेश, कौलिक के भोजन का पुण्य, कुलधर्मरत होना आवश्यक, ज्ञान से अज्ञान का विनाश, कर्मनिष्ठ ही सदासुखी, कर्मफलत्यागी वास्तविक त्यागी २२६-२२८
७. अलिप्त रहने का निर्देश, तत्त्वज्ञ की स्थिति, वही विद्वान्, कर्मकाण्ड विमर्श, निःस्पृहता, ब्रह्म हृदय में जाके ? पुण्य-पाप नहि ताके, जिहोपस्थनिमित्त कर्म, उपसंहार २२९-२३०

दशम उल्लास

विशेषदिवसार्चन

१. देवी के विशेष दिवसार्चन विषयक प्रश्न, भगवान् द्वारा उत्तर, उत्तम, मध्यम और अधम पूजा, इसके अभाव में पशुभाव, पुनः-दीक्षा, पञ्चमकार महत्त्व, पाँच पर्व, विशेष दिवसों के आचार्य द्वारा चक्रपूजन, पूजन फल, गुरुपूजन क्रम, योगिनीवृन्दपूजन, श्रीचक्र परिभाषा, कुमारी पूजन २३१-२३४
२. कन्याओं के वर्णानुसार नाम, पूजन मन्त्र, वटुक पूजन, नवरात्र पूजा समर्पण, यौवनारूढ नव प्रमदापूजन, आयुक्रम से इनके नाम, काला-नुकूलपूजन और प्रति शुक्रवार प्रमदापूजन, जप, फल, नवमी में प्रमदा-पूजन, कर्क, मकर, तुला, सिंह, मेष राशियों में पूजन व फल २३५-२४१
३. नवमिथुन पूजन, वैशाखशुक्ल प्रतिपदा का पूजन, जप, इस तरह कृष्ण चतुर्दशी पर्यन्त पूजनक्रम, एक मास क्रमिक पूजन फल, शुक्लपक्षार्चन और फल २४१-२४५
४. कार्तिक मास शुक्ल प्रतिपदा से कृष्ण चतुर्दश्यन्त पूजन व फल, मूलाष्टक पूजन, चौसठ अक्षोभ्य मिथुन पूजन क्रम और फल, इससे बढ़कर कोई पूजा नहीं २४५-२४९
५. श्रीकण्ठादि ५ मिथुन पूजन, केशवादि, गणेशादि डाकिन्यादिपूजन, दूतीयाग, वर्ष वर्ष चतुःषष्टि पीठार्चन, त्रिकपूजा, अकर्ता योगिनीपशु, कौलिक परिभाषा २४९-२५३
६. कुलपूजा का महत्त्व, न करने की हानि २५३-२५५
७. पादुका मन्त्र, पादुका पूजन फल वित्तशाठ्य का निषेध, छः अनुग्रह (श्लोक १३१), निर्माल्य अर्पण, शरीरस्थ चक्रों की डाकिनी से हाकिनी तक की देवियों के स्वरूप, उपसंहार २५५-२५९

एकादश उल्लास

कुलाचार क्रम

१. देवी के कुलाचारक्रम की जिज्ञासा और ईश्वर का समाधान की प्रतिज्ञा, कुलपूजादि रहित जेष्ठ के रहते भी कुलक्रमज्ञ कनिष्ठ ही पूजन का अधिकारी, कनिष्ठ का कर्तव्य, पूजा के बीच में ही श्रेष्ठजन के पहुँचने पर शिष्टाचार आवश्यक, अज्ञात कौलिक के प्रति आचार, कुलपूजा के नियम, निष्कल पूजन, श्रीचक्रविधि, चक्र में प्रदेश, श्रीचक्रदर्शनफल, श्रीचक्रस्थितों का अपमान वर्जित, पात्रग्रहण, कुलद्रव्यसेवन विधि २६०-२६३
२. कुलद्रव्य सेवन विधि, मत्त के कृत्य, पात्रहस्त कौलिक का कर्तव्य, सशब्द मद्यपान निषेध, पात्र के आधार, पात्र का लङ्घन वर्जित, संदीपितोल्लास, कौलिक के आचार, श्रीचक्र में पशु को कुलद्रव्य देने का निषेध, कौलिक को प्रिय की तरह देखने का निर्देश, शिवशक्ति के प्रिय, गुरु आदि, गुरु पादुका, गुरुमुख के मन्त्र, कुल पुस्तक, शास्त्र सम्बन्धी आचार २६६-२६९
३. पशुमुख से धर्मश्रवण निषिद्ध, कुलधर्म ही श्रद्धेय, पाँच प्रकार की गुरुपत्नियाँ, निषिद्ध स्त्रियाँ, कुलयोगिनी और कच्चे मांस आदि को देखकर नमस्कार, अनिष्ट प्रेरक आदि भी अनिष्ट, भक्तों की परीक्षा का निषेध, शतापराधा स्त्री को पुष्प से भी ताडित नहीं करना चाहिए, कुलवृक्षों और कुलयोगिनियों का आदर २६९-२७२
४. नौ कुलवृक्ष, महापातक, कौल निग्रहानुग्रहान्, ब्रह्मराक्षसत्व के अधिकारी, चाण्डालत्व प्राप्ति, कुलनिन्दक हन्तव्य, बहुलाभी एकका वध पुण्य, अकथ्य कुलधर्म, पशु के समक्ष अश्राव्य, पशु से कुलधर्म अकथ्य एवं रक्ष्य, सुगोप्य कौल, शाम्भवी विद्या कुलवधू, कुलशास्त्र का महत्त्व २७२-२७६
५. गुरु का प्रचार, कुलाचार-परिभ्रष्ट नारकीय, कुलधर्म का समाश्रयण, आचार का परित्याग दुःखप्रद, आचारवान् योगिनीप्रिय, अनाचार से विनाश, कुलधर्म का आधार सदाचार २७६-२७८
६. समयी और कौलिक, पतितकौलिक, पाप के गुरु-लाघव सन्दर्भ, प्रायश्चित्त आचरणीय २७९-२८०
७. अनाचार के मालिन्य का शोधन, सर्वगतिप्रद आचार, गुरु के तीन बार सचेत करने पर भी न मानने वाले शिष्य का दोष, गुरु शिष्य के पाप के सन्दर्भ, उपसंहार १८०-२८१

द्वादश उल्लास

पादुका भक्ति

१. पादुका भक्ति विषयक जिज्ञासा का ईश्वर द्वारा समाधान, पादुका महत्त्व, पादुका स्मृति, पादुका शक्ति, श्रीनाथचरण कमल की दिशा में स्मृति, पादुकामन्त्र सर्वातिशायी, ध्यान-पूजा-मन्त्र और मोक्ष के मूल, गुरुमूल क्रिया, गुरुशरण महत्त्व, सदगुरु भक्ति, गुरुमहत्त्वक्रम, गुरुतुष्टि से त्रिदेव भी तुष्ट २८२-२८६
२. शिष्य का गुरु के प्रति कर्तव्य, गुरुक्ति में निहित मुक्ति, गुरुरूप ईश्वर द्वारा पशुपाश विमोचन, श्वपच भक्त ही प्रिय, भक्तिमान् शिष्य, गुरुभक्तिअग्नि, स्थिरा गुरुभक्ति का फल, शिव गुरुरूप से मुक्ति २८६-२८७
३. देववत् गुरुभक्ति, गुरुभक्ति के अन्य उपमान, गुरुभक्ति से सिद्धियों की प्राप्ति, भक्ति-निर्व्याज सेवा, भक्ति का महत्त्व, विश्वास, भक्तिका वैशिष्ट्य, गुरु में मर्त्यबुद्धि का निषेध, अप्राकृत गुरु, धर्माधर्म प्रदर्शक गुरु, शिव के रुष्ट होने पर गुरुरक्षक, गुरु का हित आचरण, गुरुत्याग का कुफल २८८-२९१
४. गुर्वर्थाशरीरधारण, गुरु का ताडन भी प्रसाद, गुरु के लिए देववत् भोज्य अर्पण, गुरु के समक्ष अकरणीय, रहस्य का सर्वत्र प्रकाश निषिद्ध, अद्वैत का भावन, चतुर्विधा शुश्रूषा, पदे पदे अश्वमेध का फल, महत्फलदायिनी शुश्रूषा, आत्महितवत् आचरण, भक्ति महत्त्व २९२-२९४
५. भक्तिविहीन दान निष्फल, गुरुद्रव्य अग्राह्य, गुरुद्रोह निषिद्ध, गुरुदेव का अनिष्ट भयावह, गुर्वपराधी का जीवन, गुरुकोप से विनाश, गुरुनिन्दाश्रवण निषेध २९४-२९६
६. गुरुजनों के अपमान का निषेध, वेदादि की निन्दा का निषेध भूषा, जप, कृत्य और भजन के रूप, देशिक के आवास-प्रवेश के आचार, गुरु द्रव्यों का नमन, गुरु आश्रम के आचार, उक्तानुक्त कार्य की समझ, निग्रहानुग्रह के कारण गुरुदेव, गुरुकार्य स्वयं करणीय, गुर्वाज्ञापालन, गुरु के प्रति व्यवहार में सावधानी, गुरु वाक्य का अनादर, उसके सामने झूठ बोलना पाप, विशिष्ट व्यवहार २९६-३००
७. गुरु की आज्ञा के अनुसार कृत्य, अन्य व्यवहार, प्रणाम और प्रदक्षिणा, गुरु नमस्कार के प्रसङ्ग, प्रणाम के अयोग्य लोग, गुरु से दूरी के समुदाचार, उपायन, गुरुकल्प को भी प्रणाम, चार ज्येष्ठ गुरु कल्पवृक्ष वन्दनीय, विशेष व्यवहार, उपसंहार ३०१-३०५

त्रयोदश उल्लास

गुरुशिष्यलक्षण

१. देवी के प्रश्नात्मक निवेदन और भगवान् के उत्तर, शिष्य के दुर्लक्षण और ऐसे शिष्य को वर्जित करने का निर्देश ३०६-३०९

२. सत् शिष्य लक्षण और गुरु द्वारा इनके परिग्रह का निर्देश ३०९-३१२
३. सद्गुरु लक्षण ३१२-३१९
४. वेधकर गुरु, षडध्वाशोधक, जाग्रतादि पंचकज्ञ गुरु, पिण्डचतुष्टयज्ञ, वाक्चतुष्टयज्ञ, तत्त्वचतुष्टयज्ञ, त्रिविधदीक्षक, पद, पाश और पशुज्ञ, त्रितय संकेतज्ञ, लिङ्गत्रितयज्ञ मलत्रयज्ञ, चरणत्रयवासनाविज्ञ और मुद्राबन्धविज्ञ गुरु ही गुरु कहलाने योग्य ३१९-३२२
५. षट्त्रिंशत्तत्त्वज्ञ, द्विविधयाग, पिण्डब्रह्माण्ड, आसन और योगाङ्गविज्ञ, ८ पाश, पाशहर गुरु, यन्त्र मन्त्रस्वरूपज्ञ, मूलादिचक्रफलज्ञ, तत्त्वज्ञ तन्मयत्वप्रद, सहजानन्दप्रद और नियमादिनियन्ता ही गुरु ३२२-३२४
६. मोक्षलक्ष्मीप्रद, स्वसामर्थ्यप्रद, सद्यःप्रत्ययकर, उपदेश मात्र से ज्ञानप्रद, सर्वदीपक, तत्त्वार्थपारङ्गत, आत्मप्रकाशक गुरु ३२४-३२५
७. दुर्लभ गुरु ३२६
८. जैसे के उदाहरणों के सन्दर्भसिद्ध गुरु ३२७
९. सर्वोपायविधानज्ञ तत्त्वज्ञानी ३२७
१०. तत्त्वहीन कैसे मोक्ष और ज्ञान दे सकते हैं ? अतः तत्त्वज्ञ और पशु में अन्तर द्रष्टव्य ३२८
११. विद्ध, वेधक, मुक्त-मोचकभाव-अभिज्ञ, मूर्खोद्धारक, तत्त्वहीन गुरु से मोक्ष असम्भव, कुलान्वय में एक गुरु, छः प्रकार के गुरु, इनमें पाँच कार्यरूप किन्तु बोधक गुरु ही कारण, पूर्णाभिषेककर्ता गुरु की पादुका ही पूज्य, गुरु से गुर्वन्तर स्वीकृति का औचित्य और अनौचित्य, उपसंहार ३२८-३३०

चतुर्दश उल्लास

गुरु-शिष्यपरीक्षा

१. देवी के प्रश्न का भगवान् द्वारा सुन्दर समाधान, दीक्षा के बिना मोक्ष का अभाव, आचार्य परम्परा, सम्प्रदाय और सिद्धान्त, परमार्थ प्रवर्तक गुरु, शिष्य को गुरुत्व का अधिकार, परिणाम, अविच्छिन्न सम्प्रदाय आवश्यक, शिष्य की परीक्षा के बाद ही दीक्षा, मन्त्र ग्रहण न्यायपूर्ण, गुरुशिष्य की परस्पर परीक्षा अनिवार्य ३३१-३३२
२. शास्त्रीय उपदेश ही दातव्य-श्रोतव्य, दीक्षा में समय पादुका का महत्त्व, गुरु से प्राप्त ज्ञान अखण्ड रखना श्रेयस्कर, गोक्षीर और श्वाघृत की तुलना, शिष्य के प्रति गुरु की सजगता, दीक्षा योग्य शिष्य के लक्षण, गुरु की परीक्षा, उत्तम, मध्यम और अधम शिष्य ३३२-३३६
३. पिपीलिका और ८ कर्मोपदेश, कपि और उपदेश, त्रिधादीक्षा, स्पर्शदीक्षा का उदाहरण, वीक्षणदीक्षा और मत्स्य, कूर्म और वेधदीक्षा, शक्तिपात व शिष्य, सप्तधा दीक्षा, क्रियादीक्षा अष्टधा, त्रिधावर्णदीक्षा, त्रिधाकलादीक्षा, स्पर्शदीक्षा ३३६-३४०

४. वाग्दीक्षा, दृग्दीक्षा, शाम्भवीदीक्षा, मनोदीक्षा, वेधकरण तीव्रदीक्षा, तीव्रतरा शिवभावप्रदा ३४१-३४२
५. वेध की छः अवस्थाएँ, कौलिकीदीक्षा, मण्डूषादीक्षा, सिद्धाभिषेक, आठ आचार, साधक की पाँच अवस्थाएँ, पूर्णाभिषेक पवित्रशिष्य, बाह्यदीक्षा, आभ्यन्तरी दीक्षा, दीक्षा मोक्षदीप, अनादिकुलकुण्डली, मन्त्रौषध से विष की तरह दीक्षा से पशुपाशध्वस्त, दीक्षा का महत्त्व, पशुपाशविमोचिका दीक्षा ३४३-३४६
६. मोक्षदा दीक्षा, रसेन्द्र से स्वर्ण की तरह दीक्षा से आत्मा का शिवत्व, दीक्षा से जातिभेद समाप्त, दीक्षित के विभिन्न कृत्य और अदीक्षित की गति ३४७-३४८
७. दीक्षा में ज्येष्ठ कनिष्ठ, गुरु की मृत्यु के उपरान्त शिष्य ही एक सन्तान, दीक्षित मुक्त, दीक्षा में अधिवास और चक्रपूजा का महत्त्व, वर्णों की शुद्धता की समय-सीमा, नारीदीक्षा और अधिकार, दीक्षोपरान्त शूद्र को भी वेदपाठादि का अधिकार, दीक्षित द्वारा गुरुसत्कार, उपसंहार ३४९-३५१

पञ्चदश उल्लास

पुरश्चरणादि

१. पुरश्चरण विषयक प्रश्न का भववान् भव द्वारा समाधान, जप यज्ञ, मन्त्रपाद, जपध्यानमय योग, जप से दोषनाश, पञ्चाङ्गोपासनापूर्वक मन्त्रजप, पुरश्चरण की परिभाषा, पुरश्चरण के पाँच अंग, किसी अंग के छूटने पर पँचगुना जप से प्रायश्चित्त ३५२-३५३
२. विप्रभोज का महत्त्व, मन्त्रसिद्धि के उपाय ३५४-३५५
३. तिरसठवर्णी मन्त्र को मातृकाक्षरों से सम्पुट, करोड़ों मन्त्र गुरुमन्त्र के समक्ष महत्त्वहीन, अनर्थकारी जप, पुस्तकस्थ मन्त्र जप अनर्थकारी, मन्त्रजपार्थ पावन भूमि ३५५-३५६
४. मन्त्र के रहने व न रहने योग्य स्थान, आसन, जप विधि, शोषण, दाहन, प्लावन, प्राणायाम, महत्त्व ३५६-३६०
५. मन्त्रसिद्धि, न्यासकवच छन्दों का जप में महत्त्व, विना न्यास मन्त्र जप विघ्नकारक, अक्षमाला, जप की संख्या का ध्यान, मन्त्र का सोदक अर्पण, जप त्रिविध, शीघ्री, दीर्घी दोनों जप निष्फल ३६१-३६२
६. मानससस्तोत्रपाठ और वाचा मनुजाप निष्फल सूतकद्वसंयुक्तमन्त्र असिद्ध, सूतकरहित मन्त्रसिद्धि, मन्त्रार्थ, मन्त्रचैतन्य, योनिमुद्रा मन्त्रसिद्धि के लिए आवश्यक, अचेतनमन्त्र वर्णमात्र, मन्त्रजप की अनुभूतियाँ, प्रत्यय दर्शन, साठ प्रकार के मन्त्र दोष, दश संस्कार, संस्कृत मन्त्र स्फूर्त, मन्त्रजपकर्ता के लिए पवित्र खाद्य ३६२-३६७

७. अन्नदाता को मन्त्र का आधा फल, पराव्रवर्जन, कार्यसिद्धि के उपाय (जिह्वा, हाथ और मन की शुद्धि) सोलह कोष्ठक के वर्ण और उनकी संख्याएँ, अकथह चक्र, सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध और अरि के चार-चार रूप और तदनुकूल फल ३६७-३६९
८. अकडम चक्र, नक्षत्रचक्र, इनके उपयोग, फल, शशचक्र, जन्मचक्र, गणना बनाने का चक्र, ऋणधनि-चक्र, पंचमहाभूत और मातृका चक्र, गणना में ठीक मन्त्र ही जप्य, अन्य मन्त्र, मालामन्त्र, मन, शिव, शक्ति और मरुत् की एकाग्रता अशोध्य मन्त्र, असिद्धि के कारण ३६९-३७६
९. मन्त्रजप के पाँच अनुसन्धान, उपसंहार ३७७

षोडशउल्लास

काम्यकर्मविधान

१. देवी के प्रश्न और ईश्वर के उत्तर, प्रासाद परामन्त्र का तत्त्वसंख्य जप, दशांश हवन, विभिन्न आंगिक कर्म, सिद्धमन के षट्कर्मों की सिद्धि, काम्य प्रयोगकर्त्ता को परलोक नहीं, एक विधान का एक फल, देवता का निष्काम जप, होम, तर्पण, मन्त्र न्यास, ध्यान आदि सभी याग समानरूप से आचरणीय ३७८-७९
२. प्रयोगान्त में चक्रपूजा, एक लाख स्वात्मरक्षार्थ जप ३८०
३. तिथि, वार, नक्षत्र आदि के ज्ञान के बाद ही काम्यकर्म ३८०
४. ऋषि, छन्द देवतादि के बाद ही मन्त्र जप ३८०
५. कर्मसाधक अन्यज्ञान ३८०-३८१
६. ज्ञात्वाकर्माणि साधयेत्—शक्तिपरिग्रह, कुलसुधापान, कौलिक होने की शर्त ३८१-३८४
७. विभिन्न निर्दिष्टज्ञान से कार्यसिद्धि, मन्त्रपुरुषदेव, विद्याएँ, स्त्रीदेव, हुंफडन्त मन्त्र ३८४
८. विद्या स्त्री देवता, वामप्राण में सिद्धि, दोनों नाडियों के समान गमन में सर्वकार्य सिद्धि, मन्त्रों के परिचय, फट् पुष्टि, बषट्त्वश्य, हुंफट् मारण, स्तम्भन में नमः, स्वाहा शान्ति, होमतर्पण में स्वाहा, न्यासपूजा में नमः प्रयोग ३८४-३८५
९. मूलाधार में प्रासादपरा सूर्य, बीज और सहस्रार चन्द्र में पराबीज ३८६
१०. अजरामर होने की विधि, ध्यानभेद, स्थान चयन, मन्त्रजप का सर्वारिष्ट विलापक विधान, तरुणोल्लास निर्भर जप का फल ३८७-३८९
११. सर्व रोग निवारक विधान, मूर्धा में चिन्तन का फल, सर्वातिशायी-ध्यान, द्वादश आधार पद्यों में द्वादश स्वर संवलित बीज का प्रयोग एवं फल, हृत्कर्णिका में ध्यान, विधि और फल, सर्ववश्यक प्रयोग ३८९-३९१

१२. विचित्र मन्त्र प्रयोग ३९१-३९४
 १३. स्तम्भन प्रयोग, ग्रहादि विनाशक प्रयोग, सर्वरोगहर प्रयोग, विभिन्न
 समिधा होम के विभिन्न फल, वशीकरण, स्त्रीवशीकरण ३९४-३९८
 १४. ऊर्ध्वाम्नायैकनिष्णात जीवन्मुक्त, उच्चाटन, मारणप्रयोग
 १५. शान्तिक में सात्त्विक, वश्य में राजस, क्रूरकार्य में तामस, पहले
 अपनी रक्षा बाद में दूसरे का प्रयोग ३९९
 १६. श्वास को कालानल सदृश बनाने के प्रयोग, अन्य प्रयोग, उपसंहार ४००-४०१

सप्तदश उल्लास

गुरुनामादिवासना

१. देवी के प्रश्न और ईश्वर के उत्तर का कथन, गुरुस्तुति, 'गु' और
 'रु' के अर्थ, गकार, रेफ और उकार, आचार्य परिभाषा ४०२-४०४
 २. आराध्य, स्वामी, महेश्वर, श्रीनाथ, देव, भट्टारक, प्रभु, योगी,
 संयमी, तपस्वी, अवधूत, वीर, कौलिक साधक शब्दों की
 नैरुक्तिक परिभाषाएँ ४०४-४०६
 ३. भक्त, शिष्य, योगिनी, शक्ति, पादुका, जप ४०७
 ४. स्तोत्र, चिन्तन, चरण, वेद, पुराण, शास्त्र की परिभाषाएँ ४०८
 ५. स्मृति, इतिहास, आगम, शाक्त शब्दों की गुरुवासना ४०९
 ६. कौल, पारम्पर्य, सम्प्रदाय, आम्नाय, श्रौत और आचार शब्दों
 की निरुक्ति ४१०
 ७. दीक्षा, अभिषेक, उपदेश, मन्त्र, देवता और न्यास के अर्थ ४११
 ८. मुद्रा, अक्षमालिका, मण्डल, कलश, यन्त्र और आसन रूप शब्दों
 की निरुक्तियाँ ४१२
 ९. मद्य, सुरा, अमृत, पात्र, आधार, मांस, पूजा, अर्चन, तर्पण,
 गन्ध, आमोद-अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, मोक्ष, नैवेद्य और बलि
 शब्दों की निरुक्तियाँ ४१३-४१५
 १०. तत्त्वत्रय, चलुक, प्रसाद, पान, उपास्ति, पुरश्चरण, उपहार,
 मृद्वासन, स्थापन, सन्निरोधन, अवगण्ठन, अमृतीकरण, परमीकरण,
 स्वागत आदि शब्दनिर्वचन ४१६-४१७
 ११. पाद्य, आचमनीयक, अर्घ्य, अष्टाङ्गार्घ्य, मधुपर्क वन्दन,
 क्षेत्रपाल शब्दों की परिभाषाएँ ४१८
 १२. उपसंहार, ऊर्ध्वाम्नाय कुलार्णवशास्त्र, ग्रन्थ का समादर,
 पाठ माहात्म्य, अवसर महत्त्व